Welland Goldsmith School
Class -8
Subject -Hindi (2nd Language)
Answer keys

पाठ-एक देवांगना-चंद्रा

डॉ. चन्द्रा की माताजी ने यह बात इसलिए कही कि जब उनकी पुत्री को मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला तब उनकी पुत्री ने विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा पाकर उच्चतम सफलता प्राप्त की और विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया।

छात्रा डॉ. चन्द्रा से अपंग होने पर भी साहस रखने, अपने शरीर के अक्षम होने पर भी मानसिक सन्तुलन रखकर प्रतिभा का उपयोग करने, जीवन से निराश ने होकर पूरी तरह स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा लेनी चाहिए। अपनी बुरी नियति पर आँसू न बहाने और बुद्धि के बल पर सारे काम करके जिजीविषा रखने की प्रेरणा भी उससे मिलती है।

डॉ. चन्द्रा का निचला धड़ एकदम निर्जीव था, परन्तु वह अपने सारे काम स्वयं करना चाहती थी। उसमें अपंग होने की हीन भावना जरा भी नहीं थी। वह अपनी अपंगता से मुकाबला करती रहती थी और जिन्दगी में प्रत्येक काम बड़े साहस से करती रही। अपनी शारीरिक अक्षमता से ही वह साहस रखकर अपने जीवन को ढालने में सफल रही।

डॉ. चन्द्रा जब डेढ़ साल की थी, तो उसे पोलियो हो गया था। गर्दन के नीचे सारा शरीर निर्जीव हो गया था। उस दशा में उसकी माताजी ने ईश्वर से यही प्रार्थना की कि बेटी का जीवन बचा रहे। उसने काफी परिश्रम किया, बेटी का इलाज अनेक डॉक्टरों से करवाया, उसके साथ स्कूल में हर समय रही। घर पर भी हर तरह से बेटी की सुखसुविधा का ध्यान रखा। डॉ. चन्द्रा को अनेक पदक मिले, डॉक्टरेट की उपाधि मिली। इन सब कामों में उसकी माताजी छाया की तरह उसके साथ रही। उसने कभी भी अपंग बेटी का दिल नहीं दुखाया। इस प्रकार चन्द्रों की माताजी ने सहृदयता एवं ममता रखने में कोई कमी नहीं रखी। उसके लिए उक्त कथन पूरी तरह उचित कहा गया है।

डॉ. चन्द्रा के चरित्र की ये विशेषताएँ व्यक्त हुई हैं-

अदम्य साहसी: निचला धड़ अपंग होने पर भी चन्द्रा अदम्य साहसी थी और अपना सारा काम करती थी।
जिजीविषा: अपंग होने पर भी उसमें प्रबल जिजीविषा थी।
प्रतिभाशाली: चन्द्रा में विलक्षण प्रतिभा थी। वह प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाती रही।
प्रसन्न-हृदय: अभिशप्त जीवन होने पर भी वह प्रसन्न रहती थी।
स्वावलम्बी: चन्द्रा अपना सारा काम स्वयं करना चाहती थी। वह स्वयं कुर्सी के सहारे सब काम कर लेती थी।
परिश्रमी: चन्द्रा काफी परिश्रमी एवं मेहनती थी।

लखनऊ के छात्र को डॉ.चंद्रा से यह प्रेरणा लेनी चाहिए थी
कि डॉ. चन्द्रा में अपंग होने पर भी साहस रखने, अपने शरीर के अक्षम होने पर भी मानसिक सन्तुलन रखकर प्रतिभा का उपयोग करने, जीवन से निराश न होकर पूरी तरह स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा लेनी चाहिए थी। अपनी बुरी नियति पर आँसू न बहाने और बुद्धि के बल पर सारे काम करके जिजीविषा रखने की प्रेरणा भी उससे लेनी चाहिए थी।

. **निबंध**

"बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन"

भूमिका:->जिस रफ्तार से हिंदुस्तान की जनसंख्या बढ़ रही है आज एक चिंता का विषय बन गया है । अगर समय रहते जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण ना किया गया तो इसके भविष्य में दूरगामी दुष्प्रभाव होंगे। आज भारत की जनसंख्या 125 करोड़ से भी अधिक है। हमारी जनसंख्या वृद्धि दर 2.11 है। आबादी की दृष्टि से पूरे विश्व में भारत दूसरे स्थान पर है। प्रथम स्थान पर चीन है । लेकिन वह दिन दूर नहीं जब भारत चीन से भी आगे निकल जाएगा। आज सभी बुद्धिजीवियों, बड़ी बड़ी राजनीतिक पार्टियों को इस विषय पर चिंतन जरूर करना चाहिए।

जनसंख्या बढ़ने के कारण:-> जनसंख्या वृद्धि के बहुत से कारण है । एक मुख्य कारण है विवाह की अनिवार्यता और शीघ्र विवाह का होना । अधिकांश लड़के 25 से पहले और लड़कियां 18 के आसपास की शादी कर लेते हैं, अनपढ़ और अज्ञानता के कारण यह मान लेना कि बच्चे ईश्वर की देन है और जितने भी बच्चे हो जाएं सब भाग्य में होते हैं। दूसरा कारण एक से अधिक विवाह करने का है , जिसके कारण भी जनसंख्या में वृद्धि होती है।

संसाधनों में होती कमी:-> आज इस स्थान पर चले जाओ चाहे रेलवे स्टेशन हो, बस स्टैंड हो, बैंक हो चाहे कोर्ट हो हर जगह लाइन में लगना पड़ता है ।इ सका मुख्य कारण जनसंख्या का बढ़ना है और संसाधनों की कमी होना है। आने वाले समय में तो पीने के पानी खत्म हो जाएगा घर बनाने के लिए जगह नहीं रहेगी सारे जंगल नष्ट हो जाएंगे और इस धरती का पूरा संतुलन बिगड़ जाएगा।

जनसंख्या वृद्धि रोकने के उपाय:-> जनसंख्या वृद्धि को रोकना राष्ट्रहित में है और इसके लिए राष्ट्रीय नीति बननी चाहिए । छोटे परिवारों को प्रोत्साहन करने के लिए उपाय किए जाने चाहिए । अधिक संतान वाले लोगों को नौकरी से वंचित किया जाना चाहिए तथा राजनैतिक गतिविधियों में भी रोक लगनी चाहिए। परिवार नियोजन को राष्ट्रीय कार्यक्रम का दर्जा देना चाहिए। जनसंख्या रोकने के लिए आज आधुनिक संचार माध्यमों का भी प्रयोग किया जाना चाहिए।

उपसंहार:-> राष्ट्र का हर व्यक्ति शिक्षित हो तथा उसे यह ज्ञान हो की जनसंख्या वृद्धि देश हित में नहीं, बल्कि देश को विनाश के कगार की ओर ले जाएगी

"प्रदूषण की समस्या और समाधान"

आज विज्ञान और तकनीकी विकास तेजी से हो रहा है। आधुनिक साधनों को प्राप्त करने की होड़ में मनुष्य अंधाधुन्ध लगा हुआ है। ऐसे में ये सफलतायें उसके लिए नयी नयी मुसीबतें भी खड़ी कर रही हैं।

हरित क्रान्ति, औद्योगिक विकास, यातायात के साधनों का विकास तथा शहरों की बढ़ती हुई जनसंख्या इन सब से वातावरण प्रभावित हो रहा है।

धरती पर पर्यावरण की रचना वायु, जल, मिट मिट्टी,पौधे वनस्पति और पशुओं के द्वारा होती है। प्रकृति के यह सभी भाग पारस्परिक संतुलन बनाये रखने के लिये एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

प्रदूषण की समस्या और समाधान
कुछ विशेष कारणों से जब इनमें पारस्परिक असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है तो हमारा जीवन खतरे में पड़ जाता है। यह असन्तुलन ही प्रदूषण को जन्म देता है।

प्रदूषण कई प्रकार का होता है जिनमें प्रमुख हैं- वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण।
वैज्ञानिक मानते हैं कि प्रकृति के असन्तुलन के मूल में जनसंख्या विस्फोट, आवासीय बस्तियों को बसाने के लिये पेड़ों को काटना, उद्योग धन्धों का बड़े स्तर पर पनपना, खेतों में रासायनिक खाद तथा कीटनाशक दवाईयों का

डाला जाना शामिल है। मोटर वाहनों व कारखानों से निकलने वाला विशैला धुआँ भी वायु प्रदूषण का एक मुख्य कारण है।

बड़े बड़े कारखानों से निकलने वाले फालतू रासायनिक घोल नदियों में गिर कर उसे विशैला बनाते हैं। बड़े बड़े नगरों का कचरा, गन्दगी, मल मूत्र भी नदियों में ही गिरता है। यमुना और गंगा आदि नदियों का हाल आपके सामने है।

पेड़ों के अन्धाधुन्ध काटे जाने से भूमि का कटाव हो रहा है। प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ रहा है। वायु प्रदूषण से सांस के रोग, जल प्रदूषण से पेट के रोग एवं ध्वनि प्रदूषण से मानसिक रोगियों की संख्या बढ़ रही है।

सरकार इस क्षेत्र में काफी काम कर रही है। उद्योग धन्धे शहर से बाहर भेजे जा रहे हैं। पेड़ काटने की मनाही है। डीजल से चलने वाले पुराने वाहनों की जगह सी.एन.जी. ने ले ली है। लाउड स्पीकर इत्यादि का प्रयोग कम कर दिया गया है।

इसके अलावा लोगों को पर्यावरण का महत्व समझाने के लिये शिक्षित करना और उनमें अच्छे नागरिक के गुणों को विकसित करना भी अत्यन्त जरूरी है तभी भयंकर रूप से बढ़ रही प्रदूषण की समस्या को नियंत्रण में किया जा सकेगा।

1. पत्र-लेखन

457,पार्क सर्कस
कोलकाता

दिनांक 8 जून, 20XX

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्या जी,
…….
……...

विषय- विषय परिवर्तन हेतु पत्र।

महोदया,
सादर निवेदन यह हैं कि मैं आपके विद्यालय का आठवीं कक्षा का छात्र हूँ।परीक्षा पास करने के बाद मैं असमंजस की स्थिति में यह निर्णय नहीं कर पाया था कि मेरे लिए कला, विज्ञान अथवा वाणिज्य वर्ग में से कौन-सा वर्ग ठीक रहेगा। मैंने अपने साथियों के आग्रह और अनुकरण से कला वर्ग चुन लिया हैं।

लेकिन पिछले सप्ताह से मुझे यह अनुभव हो रहा हैं कि मैंने अपनी योग्यता के अनुकूल विषय का चयन नहीं किया हैं। मुझे गणित विषय में 98 अंक प्राप्त हुए हैं। अतः विज्ञान वर्ग विषय होना मेरी प्रतिभा के विकास के लिए अधिक उपयुक्त रहेगा।

आशा हैं आप मेरी कला संकाय से विज्ञान संकाय में स्थानान्तरण की प्रार्थना स्वीकार करेंगी। मैं इसके लिए सदा आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
क ख ग

2.पत्र -लेखन

21, जी.टी.बी.पार्क,
कोलकाता।

दिनांक 23 जून, 20XX

आदरणीय मोहन जी,
नमस्कार !

कल मुझे डाक से एक पार्सल मिला। पार्सल खोलने पर मुझे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ साथ ही प्रसन्नता भी हुई कि उसमें मेरी खोई हुई वही पुस्तक मौजूद थी, जिसके लिए मैं काफी परेशान था। पहले तो मैं विश्वास ही नहीं कर पाया कि वर्तमान युग में भी कोई व्यक्ति इतना भला हो सकता हैं, जो डाक-व्यय स्वयं देकर दूसरों की खोई वस्तु लौटाने का कष्ट करे। मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। यह पुस्तक बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं होती तथा मेरे लिए यह एक अमूल्य वस्तु हैं। आपने पुस्तक लौटाकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया हैं। इसके लिए मैं हमेशा आपका आभारी रहूँगा।

एक बार पुनः मैं आपको धन्यवाद करता हूँ।

आपका शुभाकांक्षी,
क ख ग

Note-सरस हिंदी व्याकरण-8
पर्यायवाची,विलोम (1To20)pg no-77,81
Do it in your exercise book